IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिमाशु जोशी के नारी पात्रों का आदर्श स्वरूप

Dr. Seema Kumari

Teacher (Intermediate College)

Sri Krishna High School (Intermediate)

सरलता और सहजता, सच्चरित्रता और कर्यव्यनिष्ठता, त्याग और प्रेम के साथ सब दुख–दर्द को स्वंय सहती हुई दूसरों की पीड़ी बाँटने की स्वभाविक एवं स्वाभिवानी क्षमता हिमांषु जोषी के नारी पात्रों में स्वाभाविक रूप में दृष्टिगोचर है जो उसे आदर्ष रूप में प्रतिष्ठित करती है। ''संस्कृति हमारे सामाजिक गुण एवं सभ्यता का नवनीत है। संस्कृति के तत्वों को अपनाये बिना कोई मानव सभ्य कहलाने का अधिकारी नहीं। सभ्यता संस्कृति का अंग है और सभ्यता का मापदण्ड–मानवता का उत्कर्ष।'' आज हम सभ्यता और संस्कृति के विकास की जिस मंजिल पर खड़े हैं वह न केवल मनुष्य के एकाकीपन, टूटन, विच्छिन्नता और आत्मिक अलगाव का समय है बल्कि प्रकृति एवं उपभोक्तावादी संस्कृति पर सर्वाधिक नियंत्रण का समय भी है।'' स्त्रियाँ स्वभाव से ही दयालु और करूणा की मूर्ति होती है अपना दुख वे जल्द किसी से प्रकट नहीं करती। महिलाएँ पति–परायणता में विष्वास करती है। ''जीवन में नारी केवल एक वार ही वरण करती है। केवल उसी को समर्पित होती है। यों षरीर का क्या है ?''

डा0 सीमा कुमारी

हिमांषु जोषी के कथा साहित्य में नारी पात्रों की सरलता और सहजता सहज देखी जाती है। दुःख दर्द को झेलती हुई भी अपनी सच्चरित्रता और कर्त्तव्यनिष्ठता से सबको प्रभावित करती है। सब कुछ स्वयं सहती हुई दुसरों की पीड़ा बाँटती है। पुरूषों की अपेक्षा अधिक सज्जनता इनमें दिखती है। मन–वचन और कर्म से वे साथ देती हैं। त्याग और प्रेम की उनमें कमी नहीं दिखती हैं। अतः ऐसी नारियों का अध्ययन और विवेचन अपेक्षित हो जाता है जो अपने आदर्ष रूवरूप से प्रतिष्ठित है।

त्याग एवं प्रेम की मूर्ति :

'सु–राज' कंचनिया परसिया की पत्नी है। गरीबी की जिन्दगी तो जीती है, लेकिन अपने पति का भरपूर सम्मान करती है। पुलिस और जमींदार की दहषत के बावजूद वह अपने पति को बेहद प्यार करती है। अभाव और गरीबी के बावजूद वह बेहद प्रसन्न रहती है। इसी कारण वह सुन्दर भी दिखती है। 'अरण्य' उपन्यास की कावेरी पारिवारिक निर्धनता की षिकार है। फटा–चिटा, मैला वस्त्र पहनती है, और हदय से स्वच्छ और निर्मल है। गाँव के ही एक युवक माणिक दा से वह प्यार करती है। एक दूसरे की देह को किसी ने नहीं छुआ। माणिक उजड्ड है। कभी–कभी कावेरी को पीट भी देता है और वह कुछ नही बोलती। माणिक एक बार घर से भाग जाता है। अपनी कलाई को दोनों दागली उसे दे देती है। माणिक के वापस लौट आने की बार–बार राह देखती है और उदास रहती है माणिक को दारू और जुए की लत है। पैसे की खातिर वह बूढ़ी माँ को धकेल देता है। जिससे उसकी कलाई की हड्डी टूट जाती है, जिसपर कावेरी उसे दुत्कारती है। ''लाज नहीं आई? डूब नहीं मरे। बूढ़े माँ पर हाथ उठाया? सबकी हत्या एक साथ ही क्यों नहीं कर देते ..... कायर!1 कसाई!'' फिर भी वह माणिक दा को भूल नहीं पाती। ठेकेदार से षादी करने के बाद भी नहीं। माणिक लौट कर आता है। ससुराल में कावेरी से मिलता है। कावेरी की आँखों में आँसू छलक पड़ते।

'कगार की आग' उपन्यास की गोमती गरीब, असहाय लेकिन रूपवती है। इस रूप के कारण ही उसे यातनाएँ सहनी पड़ती है। वह कहती है। ''यही रूप उसके लिए अभिषाप बन गया है आज जानलेवा। कितना कुछ इसके कारण झेला, कितना अभी और झेलना बाँकी है।''2 ''तुम्हारे लिये' में अनुमेहा विराग से ट्यूषन पढ़ती है। धीरे–धीरे दोनों एक दूसरे को भावात्मक रूप से चाहने लगते है। एक–दूसरे का व्यवहार दोनों को समीप ले आता है। भावुक व्यक्ति प्रकृति प्रेमी होता है। वह कहती है– ''रात को खिड़की खोलकर अंधकार में डूबे देवदार के वृक्षों की ओर पता नहीं क्यों मैं घंटों बैठी ताकती रहती हूँ। मुझे न जाने क्या हो गया है।''[3]

विराग का तर्क है कि प्रेम के साथ–साथ विवाह आवष्यक नहीं है। ऐसे उदासीन कथनों से वह उदास हो जाती है। वह चिढ़कर कहती है–''आपसे विवाह के लिए किसने कहा है। सन्यासी बनने या हरिद्वार जाने से कौन रोक रहा है आपको?''[4] विराग साथ–साथ चलने से हिचकता भी है। लोगों की निगाह से बचना चाहता है। तब वह अपनी निडरता और साहस व्यक्त करती है। ''सड़क पर साथ–साथ चलने से क्या हो जायगा ? यही कि अंकल देखेंगे, आंटी देखेंगी, यही तो गम है न आपको। मैं कहती हूँ, वे देखेंगे भी तो क्या होगा ? भय वहीं रहता है, जहाँ पाप छिपा होता है।''[5]

'छाया मत छूना मन' में वसुधा का पिता स्वर्गवासी हो जाता है। उसकी माँ षुरू से ही चरित्रहीन थी। ''दो बच्चों की माँ बनने के बाद भी उसमें गजब का रूप था। गजब का रंग था। संगमरमर सी तराषी हुई देह। तीखे नयन–नक्षा। गोरा गुलाबी रंग, लोग देखते तो देखते ही रह जाते।''[6]

'महासागर' की निकोबारी लड़की नोने यानि नीना पढ़ी–लिखी नहीं, लेकिन सुंदर है। उसके उजले दांतों की चमक और सरलता साकेत को अच्छी लगती है। निकोबारी द्वीप से उसे अपने षहर ले आता है। नये वस्त्रों, नये चप्पलों में चलना उसे अटपटी लगती है। दर्पण में अपना चेहरा देख उसका मन नहीं अघाता। ''सफेद साड़ी में इन प्रसाधनों के बिना वह कितनी अच्छी लगती है।''[7] साकेत उसे अपने घर ले आता है। बहन से कहता है यह तुम्हारी भाभी है। बहन उसकी रूप प्रषंसा में कहती है– ''बड़ा मीठा बोलती है। हँस–हँसकर बातें करती है। इतने चमकीले सुंदर दाँत, इतनी खुबषूरत बड़ी–बड़ी आँखें मैने किसी की भी नहीं देखी।''[8]

कुछ कहानियों में भी ऐसी नारी पात्रा हैं जो प्रेम और त्याग के नाम पर समर्पित है। 'सफेद सपने' में एक लड़की जिसका नाम कुछ नहीं है। एक लड़का से अनायास मिल जाती है। वह लड़का अपने जीवन में आयी एक चालबाज लड़की के बारे में जिक्र करता है। उस लड़की से उसे काफी दुख पहुँचा था। बादवाली यह लड़की उसका मित्र बनकर उसका दुःख दूर करना चाहती है। वह छोटे बच्चे की तरह उसे समझाती है '' इस कच्ची उम्र में इस ओर नहीं बढ़ना चाहिए। षुरू– षुरू में अच्छा लगता है। लगता है, यही सब कुछ है, पर धीरे–धीरे सारी वस्तुएँ व्यसन बन जाती है। काम करने वाली कुँवारी लड़कियों की तो आजीवन विवषता होती है। कभी प्यार की, कभी रोजी–रोटी की।''[9]

'नाव पर बैठे हुए लोग' में सुधा के पिता गंभीर रूप से बीमार है। माँ का व्यवहार घर के सदस्यों के प्रति अच्छा नहीं रहता। सुधा चाहती है कि छोटी बहन पढ–लिखकर अपने पाँव पर खड़ी हो जाय, इसलिए वह अपनी षादी भी नहीं करती। लेकिन बहन इना का चाल–चलन ठीक नहीं होने के कारण दुखी रहती है। उसकी माँ का भी पिता के साथ कर्कष व्यवहार रहता है। यदा–कदा मार भी बैठती है। एक सुधा ही हैं जो सबका कल्याण चाहती है। पिता का भी ध्यान रखती है। अपनी जिंदगी दाँव पर लगाकर बहन की जिन्दगी सुधारना चाहती है।

'कटी हुई किरणों' की रजियानी मुस्लिम युवती है। वह लोहार जाति के पुरूष हरपतिया से शादी कर लेती है। हरपतिया को जात से काट दिया जाता है, पर वह रजियानी को नहीं छोड़ता। इधर रजिया अपने प्रेम का त्याग कर देना चाहती है। उसे बुरा लगता है कि उसके कारण हरपतिया को जात–बिरादरी से काट दिया जाता है। उसका यह उदार चरित्र उसे महान बना देता है। वह कहती है '' मुझे छोड़ दो, वह सब जी का जंजाल है। अपने परान को दुःख क्यों देते हो? सताते हो। पानी में रहकर मगरमच्छ से दुष्मनी। तुम चन्द्रायणी कर लो। थोकदार पंचों को पांच गांव के प्रधानों को मुख छुवाई दे दो। फिर बिरादरी में मिल जाओगे और सारी मुसीबत कट जाएगी।''[10]

'आदमियों के जंगल में षकुन्त कॉलेज में पढ़ती है। अपने जितेन भैया की बेरोजगारी में चिंतित रहती है। घर के अन्य लोग जितेन की उपेक्षा किया करते हैं, परन्तु षकुन्त के हदय में उसके त्याग और प्रेम की भावना दिखती है।

'इसबार' में अतिमा एक त्यागी स्त्री के रूप में चित्रित है। उसके दिल में बड़े बुजुर्गो के प्रति प्रेम का अगाध भंडार है। अमेरिका में वह रहती है। पर वह गाँव के ताऊ–ताई को नहीं भूलती। जबकि वे रिष्ते में कोई नहीं है। जब वह आती है तो गाँव के इन बुजुर्गो के लिए दवाईयाँ तथा अन्य सामान लाकर देती रहती है। इनलोगों के यहाँ एक–दो दिन फोन जब नहीं लगता तो वह काफी चिंतित हो जाती है। इस बात की चिंता बीरू भाई फोन पर प्रकट करती है।

प्रेम एवं भावुकता की देवी, कोमल एवं वियोगिनीः

'सु–राज' में कंचनिया पढ़ी–लिखि नहीं है। परन्तु हदय की भाषा समझती है। जमीन्दार तथा पुलिस उसे कम नहीं सताता फिर भी उसके भावुक हदय में पति के प्रति अगाध श्रद्वा तथा प्रेम बसा रहता है। उनलोगों के कुटिलचक्र में नहीं फँसती। 'अरण्य' उपन्यास की कावेरी गरीब भले है। फटा–चिटा वस्त्र भले पहनती हो पर मानिक को दिलोजान से प्यार करती है। कावेरी की शादी दूसरी जगह हो जाती है, पर वह मानिक को नहीं भूल पाती वियोग की आग में जलती रहती है।

'तुम्हारे लिए'–प्रेम कथा पर आधारित उपन्यास है। अनुमेहा का विराग के प्रति प्रेम तथा अनुराग देखा जा सकता है। कोमल कांत भाषा में जोषी जी ने इस उपन्यास की रचना की है। अनुमेहा प्रेम एवं भावुकता की साक्षात मूर्ति है। भीतर–बाहर से समान तथा स्वच्छ है। वह डाक्टर बन जाने के बाद भी षादी कहीं करती। विराग के अस्थिर मन के कारण ही अनुमेहा की जिंदगी में रिक्तता रह जाती है। 'महासागर' की निकोबारी आदिवासी युवती अनपढ़ एवं गँवार है। वह मजदूरी करती है। देखने में सुन्दर तथा रूपवती है। उससे भी ज्यादा सुन्दर उसकी आत्मा है, हदय है। लेकिन अत्यधिक भावुकता के कारण वह भी बार–बार गलती कर बैठती है। यानि आवष्यकता से अधिक उदार बन जाने के कारण जीवन में नुकसान उठाना पड़ जाता है।

'अनचाहे' कहानी की जुवेदा एक ऐसी सरल मूर्ति है जो लेखक से जब तब बात करती। अनचाहे बच्चों जैसे सवाल करती रहती है उसके हदय में तनिक भी छल–पंप्रच नहीं है।

'अथाह' कहानी की कुसुम एक दफ्तर में टाइपिस्ट है। पढ़ाई के वक्त ही दिवाकर से उसे प्रेम हुआ था। परन्तु, एक लंबे अंतराल के बाद दिवाकर का एक पत्र आता है कि वह जनता एक्सप्रेस से जा रहा है। इसलिए वह आकर स्टेषन पर भेंट कर सकती है। वह थोड़ा लेट पहुँचती है। निराष होकर वह इधर–उधर चली जाती है। घर जब पहुँचती है तो पता चलता है कि दिवाकर ट्रेन से उतरकर कुसुम के यहाँ तीन घंटे रहकर वापस जा चुका है। उपहार में साड़ी भी दे गया है। कुसुम अन्तर्वेदना से छटपटा कर रह जाती है। उसके कोमल मन पर स्वयं की गलती से ठेस पहुँचती है– अपने आप खींझ पड़ती है।

'दंषित' कहानी की कनु अतिषय भावुक युवती है। यद्यपि आरंभ में कहानीकार ने उसे हँसती, खिलखिलाती बच्ची जैसा चित्रण किया है, बाद में एकाएक उसे खामोष तथा गंभीर बना दिया गया– जिस कारण उसका चरित्र रहस्यमय हो जाता है। एक तरह से कनु पर दया आने लगती है।

'किनारे के लोग' में एक अनाम महिला है जो 24 नं0 कमरा में रहती है वही तपन जो टी0वी0 का मरीज है दूसरे कमरा में रहता है। तपन की पत्नी तपन को छोड़ चुकी है। उधर अनाम महिला का पति दूसरी महिला के साथ चला जाता है। अनाम महिला को लापरवाह तपन पर तरस आती है। खतरे में उसकी जिंदगी को देख वह यदा–कदा सहायता कर देती है। विस्तर लगा देती है। बिखरे सामानों को समेट देती है। चाय बना कर लाकर देती है। भावुकतावष वह ऐसा करती है सो बात नहीं। उच्च मानवीयता उसमें दिखायी देती है। वह कभी–कभी शेष भी प्रकट करती है।

'तपन को कुछ ठण्ड की षिकायत थी, इसलिए महिला बरस रही थी, कि उसे ठीक ढंग से रहना नहीं आता। वह हद दर्जे का 'लापरवाह है।''[11] महिला पति वियोगनी भी है स्वयं भी वह दुखी है फिर दूसरे दुःख में हाथ बँटाती है।

'वह' कहानी में एक हरफनमौला युवती है जो निष्छल प्रेम की पीड़ा बर्दाष्त करती है। बाहर से हँसती –खिलखिलाती है, पर भीतर उदासी घिरी रहती है। अपने प्रेम को वह इसलिए व्यक्त नहीं करती क्योंकि उसे लगता है कि उसका प्रेम एकांगी है। अतः वियोगिनी की सी व्यथा समेटे रहती है।

'सागर तट के षहर' की बहिरा जो इजिप्ट की एक विदूषी महिला है, उसका पति दूसरी महिला के साथ रहता है। बहिरा अपनी कमाई से दोनों बेटी–बेटा को मेडिकल तथा इंजीनियरिंग की पढ़ाई कराती है। वह वियोगिनी बनकर जीती है। नार्वे में डेढ़ महीने लेखक का सानिध्य उसे मिलता है। महिला के भावुक हदय से लेखक प्रभावित होता है। नार्वे से वापस होने पर महिला लेखक को पत्र लिखती है–'' जिन्दगी में मैं दो ही बार दहाड़ मारककर रोयी एक उस दिन जब राष्ट्रपति नासिर की हत्या हुई थी। दूसरी बार उस रात जब तुम गये और भुतहा गेस्ट हाउस' में मैं निपट अकेली रह गयी थी।''[12]

मन, वचन से कर्त्तव्यनिष्ठ, शहरी–ग्रामीण एवं आदिवासी युवती का प्रेम :

कर्त्तव्यनिष्ठ में स्त्रियाँ सदा आगे रही हैं। मन–वचन से जो एकबार सोच लेती है वह करके ही छोड़ती है। 'सागर तट के षहर' में इजिप्ट देष की एक कुषग्र विदूषी महिला जिस कार्य से नार्वे आती है उस कार्य को जी जान से पूरा करती है। पति उसे छोड़ चुका है, लेकिन उसके मन की तमन्ना है कि अपने–बेटे–अपनी बेटी को उच्च तकनीकि षिक्षा दिलाकर रहेगी। वह नौकरी करती है और संतानों को पढ़ाती है। 'किनारे के लोग' की अनाम महिला एक सुसंस्कृत महिला है वह तपन को कष्ट में देखकर द्रवित हो जाती है। एक–दुसरे की सहायता करना मानवीय आचरण तथा हमारी संस्कृति है। वस्तुतः ''संस्कृति हमारे सामाजिक गुण एवं सभ्यता का नवनीत है। संस्कृति के तत्वों को अपनाये बिना कोई मानव सभ्य कहलाने का अधिकारी नहीं समझा जा सकता है। सभ्यता संस्कृति का अंग है और सभ्यता का मापदण्ड है मानवता का उत्कर्ष।''[13]

'अरण्य' की कावेरी की विवाह भले दूसरे पुरूष से हो जाती है लेकिन प्रेमी माणिक को भी श्रद्वा की दृष्टि से देखती है। दूसरी ओर विवाह धर्म का भी निर्वाह करती है। हाँ एक–दो षहरी नारी पात्र ऐसी हैं जो अमानवीय आचरण अपनाती है। उदाहरण के तौर पर 'समय साक्षी है, उपन्यास की नारी पात्राएँ उदेष्य से भटक जाती हैं इसका कारण पष्चिम का प्रभाव है तथा भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के कारण स्त्रियों का बुरा हाल है। ''आज हम सभ्यता और संस्कृति के विकास की जिस मंजिल पर खड़े हैं, वह न केवल मनुष्य के एकाकीपन, टूटन, विच्छिन्नता और आत्मिक अलगाव का समय है, बल्कि प्रकृति एवं उपभोक्तावादी संस्कृति पर सर्वाधिक नियंत्रण का समय भी है।''[14] ''किसी देष का आचार–विचार ही उस देष की संस्कृति कहलाती है, किन्तु आचार–विचार उसका बाह्य रूप है। उसका आंतरिक रूप तो मानव का शेष प्रकृति के साथ तादात्मय है।''[15]

'महासागर' उपन्यास में निकोबारी लड़की नोनो जिसका नाम साकेत नीना रखता है। बिल्कुल पढ़ी–लिखी नहीं है। ठीक तरह से हिन्दी भी नहीं जानती है। सड़क–निर्माण में मजदूरी करती है यह आदिवासी युवती हदय की साफ तथा सरल है। दिल में जरा भी मैल नहीं है। हाड़ तोड़ कर काम करती है। वह कमजोर और बीमार भी रहती है। साकेत इंजीनियर की हमदर्दी पाकर मुरझायी लता हरी हो जाती है। साकेत के डेरा में आकर काम कर जाती है। सरलतावष काम कभी–कभी गड़बड़ा भी जाता है फिर भी साकेत उसे कुछ नही कहता है। साकेत उसके साथ हमदर्दी ही रखता है। साकेत जब बीमार पड़ता है तब नीना उसकी काफी सेवा करती है। उसके ट्रान्सफर की बात सुनकर नीना बूझी–बूझी सी रहती है। फिर पुराना रंग–ढंग अपना लेती है। बातचीत भी कम करने लगती है। डेरा पर आकर गुम–सुम काम कर चली जाती है। साकेत निराश भाव से कहता है वह अब चला जायगा। इस पर वह रो पडती है। '' अपने दोनों हाथों में वह अपना मुँह छिपा लेती है। झटके से मुड़कर दूर खड़ी होती है और फिर वैसी ही झमाझम बरसात में भागती हुई ओझल हो जाती है। बादल गरजते हैं। बिजली कड़कती है। साकेत के होठ खुले रह जाते है।''[16]

दया, करूणा एवं प्रेम पर मिटने वाली एकनिष्ठ प्रेमिका :

स्त्रियाँ स्वभाव से ही दयालू और करूणा की मूर्ति होती हैं अपना दुःख वे किसी से जल्दी प्रकट नहीं करती। ऐसा ही स्त्री–पात्र 'सु–राज' की बड़ी बहु आनन्द की पत्नी है। जब कई महीने बाद उसका ससूर गंगिका घर आता है तब वह मैली गठरी की तरह उसके पाँव पर गिर पड़ती है। उसकी दीनता का बखान षब्दों में नहीं किया जा सकता। ''बड़ी–बहू को दूसरों के खेतों में मेहनत–मजदूरी कर के भी एक बख्त की रोटी नसीब नहीं हो पा रही है।''[17]

'अरण्य' उपन्यास की रूखली बोज्यू कावेरी के साथ प्रेम–भाव रखती है। कावेरी की मामी कावेरी को नहीं चाहती, पर रूखली बोज्यू हमेषा कावेरी को स्नेह देती है। उसके दर्द को बाँटने की कोषिष करती है। हरेले का मेला जब कावेरी नहीं जाती तब वह कैसे चिंतित होती है। चूंकि ''जब से उन्होंने इस घर की देहरी पर पाँव रखा था, तब से ऐसा कभी हुआ नहीं कि हरेले का मेला आए और कावेरी दस–पाँच दिन से तैयारी न करे और मेला न जाय।''[18] 'अरण्य' की पधानी खरूस औरत है, लेकिन पति जब जेल चला जाता है तब वह करूणा की मूर्ति बन जाती है। सामने विपत्ति का पहाड़ देख बर्फ की तरह पिघल जाती है। इधर पुरूषोत्तम की करतूत के कारण कूँवर देव फाँसी से लटक जाता है। घर के बाल–बच्चे तबाह हो जाते हैं। उसकी पत्नी दुत्कारती है क्या मिला यह सब करके, धन के लालच में यह दोजख काम क्यों किया? वह कहती है '' कुँवर देव के बच्चे गाँव छोड़कर भागने को मजबूर है, खेत, मकान सब तुमने अपने नाम करवा लिए।... सुखिया से अब कहते हो कि घर से निकल जाए। तुम्हारी अन्तरात्मा क्या यही कहती है।''[19] कावेरी मामी का घर छोड़ कर अपना घर पहूँच मजदूरी करने लगती है। किन्तु रूखली बोज्यू जब घर का खास्ता हाल बयाँ करती है तब कावेरी चिंता में पड़ जाती है। अंत में वह बूढ़े ठेकेदार से शादी कर लेती है। यह सोचकर कि घर में मदद कर सकती है। परिस्थितिवष ही मामी का हृदय परिवर्तित हो जाता है। बूढ़े ठेकेदार से शादी कराना उसकी मामी नहीं चाहती है, परन्तु कावेरी नहीं मानती और मामी के परिवार की सहायता के लिए बूढ़े, अमीर ठेकेदार से शादी कर लेती है।

'कगार की आग' की गोमती के हृदय में करूणा है। वह खुषाल के साथ शौक से शादी नहीं करती, बल्कि, कर्जा तोड़ने के लिए ही शादी करती है। अपने बच्चे और पति के प्रति उसके हृदय में अगाध प्रेम रहता है। उसने खुषाल के पास देह बेचने के ख्याल से शादी नहीं की। ऐसा होता तो वह कहीं भी कर सकती थी। कहानीकार लिखता है ''उसे इच्छा होती तो यह किसी के भी घर बैठकर मिल जाता। देह के बदले दो रोटियाँ कहाँ नहीं प्राप्त होती। पर यह उसने कब चाहा था''[20] 'छाया मत छूना मन' की वसुधा अपने बीमार पिता के प्रति पूरी संवेदना रखती है। जबकि उसकी माँ पिता पर जरा भी ध्यान नहीं देती। वह स्वंय विवाह न कर अपनी छोटी बहन की जिन्दगी बनाने में लगी रहती है। वह घर का खर्च भी चलाती तब भी माँ की जली–कटी वही सुनती है। 'महासागर' की नीना देहाती निकोबारी आदिवासी लड़की है, मजदूरी करती है। वह असहाय और कृषकाय बनी दरिद्रता में जीती है। साकेत इंजीनियर जब बीमार पड़ता है तब वह चिंतित हो जाती है और उदार चेता बन सेवा करती है ''उसके मौजे उतार देती है, जूते के फीते बाँध देती है। उसके इधर–उधर बिखरे कपड़ों को समेट कर रख देती है। उसके रूखे बालों को कंघी से सँवार देती है। उसके डेरे पर वापस आते समय दरवाजे पर खड़ी रहती है।''[21]

'महासागर' की ही दीप दी साक्षात दया और करूणा की देवी है। वह कॉलेज में काम करती है, अकेले रहती है। साधारण सी साड़ी पहनती। चेहरे पर झूर्रियाँ पड़ने लगी थी। उम्र भी अधिक हो गई थी। उसने शादी नहीं की। साकेत उससे कम उम्र का लड़का है, वह ट्यूषन पढ़ाकर अपना खर्च निकालता है। दीप दी उसकी मदद किया करती है। उसकी जरूरत के सामान भी वह पूरा करती है। साकेत के इंजीनियर बन जाने पर वह बहुत खुष होती है। साकेत जब अंडमान निकोबार चला जाता है तब दीप दी उदास रहने लगती है। दोनों के बीच निष्छल रिष्ता था। साकेत के आते–जाते रहने पर दीप दी को अंतहीन सुख मिलता था। उधर साकेत भी अंडमान में दीप दी को याद करता है। ''दीप दी के भी पत्र नहीं आते। उसने मकान, पता सब बदल दिया। पिछली बार कभी लिखा था। लंबे समय तक कभी तुम्हें पत्र न मिले, पत्र मिलने जब बंद हो जाएँ तो समझ लेना कि दीप मर गई....।''[22] नीना की मृत्यु के बाद साकेत विक्षिप्त रहने लगता है। दीप दी चिंतित रहने लगती है। उसकी हालत देख उसे बर्दाष्त नहीं होता। वह सचमुच त्याग की देवी है। वह साकेत से कहती है '' तू यहाँ रह मैं फिर नौकरी करूँगी। कोई और काम ढूँढूगीं, लेकिन तुझे किसी भी

तरह का कष्ट नहीं होने दूँगी। तेरे कुछ मदद कर सकती तो मेरे जनम–जनम की सारी साध पूरी हो जाती।'' इस उपन्यास की दीप दी सबसे सषक्त नारी पात्र है। एकाकी जीवन जी कर संघर्ष करती है। जब साकेत अंडमान की ओर निकल पड़ता है तब वहाँ की जलवायु पर अनिष्ट की आषंका उत्पन्न होने लगती है। अतः साकेत को लौटाने वह कलकत्ता पहूँच जाती है, लेकिन तब तक साकेत जहाज पकड़ लिया होता है। साकेत जो अपनी अबोध बच्ची को छोड़ गया था उसे गोद में लेकर फफक पड़ती है। अतः दीप दी का व्यक्तित्व श्रेष्ठ, उदार और दयालू है।

'तुम्हारे लिए' उपन्यास की अनुमेहा विराग से प्रेम करती है, परन्तु विराग धीरे–धीरे दूर होता जाता है। दोनों के बीच दार्षनिक प्रेम था। वह बाद में डाक्टर बन जाती है। विराग के पूछने पर कि उसने विवाह क्यूँ नहीं कर लिया तो वह बड़े सहज भाव से कहती है '' जीवन में नारी केवल एक बार ही वरण करती है। केवल उसी को समर्पित होती है। यों शरीर का क्या है?''[24]

'सजा' कहानी की भावना को पति छोड़कर दूसरा विवाह रचा लेता है, किन्तु भावना दूसरी शादी नहीं करती। बीमार पति के मर जाने के बाद उसके श्राद्ध कर्म लिए भावना सौत के हाथ कुछ रूपए तथा साड़ियाँ दे जाती है। सौत के बच्चों की पढ़ाई–लिखाई बंद न हो, मदद की सांत्वना दे कर जाती है। यहाँ तक की सास को भी माँ की तरह मानती है। सास से वह कहती है– ''ये कुछ रूपए हैं माँ जी! क्रिया कर्म में लगा देना। बच्चों को दुःख न देना।... उन्हें फिर स्कूल भिजवा देना।.... जो कुछ बन सकेगा मैं करूँगी।''25

'हंसा' कहानी की हंसा अवनींद्र की पत्नी है, वह षिक्षित, समझदार और सुसंस्कृत महिला है। उसका पति अवनीन्द्र उसे क्लब ले जाता है। खुद दूसरी महिला के साथ डान्स करता है और शराब पीता है। हंसा से भी वह ऐसा ही करने को कहता है पर वह किसी अन्य पुरूष के साथ डांस करने को तैयार नहीं होती। वह आचरण से पवित्र महिला है और एकनिष्ठ प्रेमिका की भांति अपने पति को ही प्यार करती है। 'जलते हुए डैने' में सीमा भाभी के पति को समाज हित में काम करने के कारण पुलिस जेल लेकर चली जाती है। पुलिस कई बार मार–पीट भी कर चुकी थी। अतः, सीमा पति को समझाती है ऐसा–वैसा कुछ न करे जिससे परेषानी बढ़ जाए। कुछ हो जाने पर बच्ची रूही का लालन–पालन कौन करेगा। जब उसके पति षिव दा को लाल–कोठरी की सजा हो जाती है तब वह उदास–सी रहने लगती है। अंत में षिव दा जेल में ही मर जाता है। सीमा की जिन्दगी कारूणिक हो जाती है पर गलत राह पर कभी नहीं चलती।

नारी स्वाभिमान एवं दृढ़ता, संघर्ष प्रियता, सहनषीलता, पतिपरायण, परिश्रमी एवं श्रमजीवी, कीचड़ में कमल

स्वाभिमान अपने आप में एक मनुष्योचित गुण है जो हिमांषु–जोषी के नारी पात्रों में स्वाभाविक रूप से दिखाई देता है। जो नारी संघर्षषील और परिश्रमी होगी, नैतिकता और मर्यादा जिसके आचरण का आभूषण होगा वह न तो चापलूसी में विष्वास करेगी और न जी हजूरी। 'अरण्य' उपन्यास में पंडित हिरदय राम की पत्नी पंडित जी के गुजर जाने के बाद छोटी बेटी सुक्की के साथ कष्टपूर्ण जीवन बिताती है। बेटा माणिक भी घर छोड़कर भाग जाता है। वह कई–कई दिन भूखी रह जाती है, पर किसी के आगे आँचल नहीं फैलाती है। वह कभी–कभी विक्षिप्त भी हो जाती है। उसकी मौत भी अकस्मात ही हो जाती है। एक रात जंगल में जब कुँवर देव षिकार खेलने जाता है तब धोखे में उसकी बंदूक से चली गोली की वह षिकार हो जाती है।

'कगार की आग' की गोमती की बदकिस्मती रही कि तीन बार उसकी शादियाँ हुई पर तीनों पतियों द्वारा किसी न किसी रूप में उसका शोषण होता रहा। लाचारी वष वह हवस की षिकार होती है, लेकिन स्वाभिमान को वह गिरने नहीं देती। लाला तिरपन लाल की यौन यंत्रणा की षिकार भी होती है। चार सौ रूपए कमाई कर खुषाल का कर्जा तोड़ देती है। वह खुषाल को दुत्कारते हुए कहती है ''मेरी सद्गति हो गई, पर तुम्हारी कैसे होगी? इसलिए आई हूँ आज, घरी भरने की रकम चुकाए बिना तूने मुझे अपने बेटे से मिलने के लिए नहीं जाने दिया था न? ले गिन रूपए! पूरे बीस बीस ही हैं न? अब मैं तुमसे मुक्त हो गई न? डर मत मैं तो खुद ही तेरी देहरी के भीतर पाँव नहीं रखूँगी अब।''[26]

'अरण्य' की हृदय राम की पत्नी हो या पधान मामा की पत्नी अथवा कावेरी या 'कगार की आग' की गोमती या 'समय साक्षी है' उपन्यास में मंत्री तिमिर वरण की पत्नी, ये सभी महिलाएँ पति–परायणता में विष्वास करती है। कावेरी बूढ़े पति से शादी कर के भी उसकी सेवा–श्रूसा करती है। गोमती कितना कुछ

संघर्ष नहीं झेलती, लेकिन उसका मन अंत में पति के ओर ही मुड़ता है। मंत्री तिमिर वरण अनेक रूपवती महिलाओं से संबंध रखता है, आचरण से वह पतित है, फिर भी उसके पत्नी अपना आचरण नहीं बिगाड़ती। अपने पतित पति पर तरस ही खाती है। एक समय तिमिर वरण खुद महसुस करता है– ''सब ने छोड़ दिया साथ, पर यह छाया की तरह साथ चलती रही। अपनी आँखों से कितनी मेघनाओं को किन–किन रूपों में नहीं देखा था। जीवन भर क्या–क्या जुल्म न सहे थे, पर कभी उफ तक न की थी।''[27]

हिमांशु जोषी के उपन्यासों में ऐसी नारियों का भी चित्रण है जो अपेक्षाकृत संघर्ष करती हैं। 'कगार की आग' में गोमती का पति पिरमा निरा मूर्ख है। अपने कक्का की गुलामी करता है, मार खाता है। गोमती उससे ज्यादा संघर्ष करती दिखाई देती है। वह भी अपने पति की खातिर सब सहती है। इज्जत भी उसे गँवानी पड़ती है। वह मजदूरी कर पति का साथ देती है। वह दोषियों को जवाब जरूर देती। वह किसी को भी लथेड़ने से नहीं चूकती। एक रात वह वर्षा में तेजूआ उसके घर की तरफ नाला खोदकर पानी बहा देता है, वह बेचारी भीगती हुई पानी बाहर करती है, उस गरीब का सामान भी बहुत बह जाता है। गोमती को एक दिन उसका चचेरा देवर घसीट कर अपने घर ले जाता है। कमरे में बद कर उसके कपड़े फाड़ कर बलात्कार करना चाहता है। लेकिन वह संघर्ष कर हिम्मत जुटाती है–'' भूखी सिंहनी सी उस पर जोर से झपटी। जलता हुआ छिलका उसके मुँह पर दे मारी और दोनों हाथों के पंजे उसकी गर्दन पर इतनी जोर से गड़ाए कि तेजुआ का शरीर धीरे–धीरे षिथिल पड़ने लगा। और वह गों–गों–गों करता हुआ एक ओर लुढ़क पड़ा।''[28]

'छाया मत छूना मन' की वसुधा आजीवन संघर्ष करती है। माँ द्वारा यातना, फिर इन्हीं माँ–बहन के लिए अपना जीवन कुर्बान कर देना, ऑफिस में काम करना और नौकरी से प्राप्त राषि स्वयं पर खर्च न कर उसी परिवार के लिए खर्च करना एक अदद हिम्मत और उदार चेता महिला का ही काम हो सकता है। न अपनी सेहत पर उसने ध्यान दिया और न अपनी प्रेमी की बात उसने मानी, उसकी बात मानकर यदि उससे विवाह कर लेती तो उसके साथ सुख से रह सकती थी, लेकिन उसी माँ–बहन के लिए वह कुँवारी रह जाती है और अंत में कैंसर बीमारी में वह चल बसती है।

उपन्यासों की तरह कहानियों में भी ऐसी अनेक नारी पात्रा हैं जिनमें उपर्युक्त गुण विद्यमान है। 'उसका तारा' कहानी की वृद्धा हरकू की माँ है। अपनी खेती–बारी करती है। शुरू से अंत तक जीवन संघर्ष करती रहती है। हरकू जब से पलटन में शामिल हो जाता है, तब से उसके आने की बाट जोहती रहती है। लेकिन हरकू वापस नहीं आता। घाटी में आये अन्य पलटनों को बुढ़िया अपने पुत्र के समान समझती है। लकड़ी–काठी तथा दूध भी पलटनों को वह भिजवाती है। एक दिन सिपाही जब दूध का पैसा देता है तब बुढ़िया स्वाभिमान से वात्सल्य भाव से बोल उठती है ''क्या कहता है रे? माँ को दूध का मोल देता है.... पगला कहीं का।''[29]

'अनचाहे' कहानी में गुड्डे की माँ पतिपरायन स्त्री है। भले ही उसका पति कहानी–लेखक के प्रति संदेह प्रकट करता है परन्तु वह पति को दिलोजान से चाहती है तथा सम्मान भी करती है। 'अंधेरे में' खिलानंद बाबू की पत्नी यानि लच्छलि की माँ अपने बीमार पति की प्राणपन से सेवा करती है। वह टी0वी0 रोग से ग्रसित है। बच्चें को दूध खाने नहीं देती, पर बीमार पति को दूध देती है। जबान बेटी ब्याह के लिए खड़ी है पर सारे गहने बेचकर पति के इलाज मे लगा देती है दुर्भाग्य की मारी बेचारी अंततः विधवा होकर जीती है।

'परिणति' कहानी में वितस्ता 'पतिपरायण है। उसका पति चिरंतन जुवेदा नाम की युवती से संबंध रखता है तो भी वितस्ता अपने पति से कहती है– ''जो आपको प्रिय है, वे सब मुझे भी प्रिय है। जिन्हे आपने अपने प्राणों से भी बढ़कर अधिक चाहा, मेरे लिए उनका मूल्य मेरे प्राणों से भी अधिक क्यों न हो। विवाह की वेदी पर परमात्मा को साक्षी रखकर मैंने सौगन्ध खाई है कि जिस ढ़ंग से आप सुखी रहें, जो आपको अच्छा लगे, उसी को अच्छा मानकर आपके चरणों में बैठी, जीवन पर्यन्त आपकी सेवा करती रहूँगी।''30

'त्यागिनी' कहानी की मुख्य पात्रा यामिनी बीमार पति विभूतिबाबू की खुब सेवा करती है। 26 वर्षो से उसका पति रूग्न है। ऐसी स्थिति में पति से उसे कितना कुछ मिला होगा, कल्पना करने की बात है। फिर भी कर्त्तव्य का निर्वाह लगन से करती है। 'खिलौने' में मालिनी अपने पति सुबोधबाबू के दुःख में साथ देती है।

संतान के गुजर जाने के बाद से सुबोधबाबू गमगीन रहने लगते हैं। खिलौनों से ही उन्हें प्रेम हो जाता है। सारे खिलौनों को अपने कमरे में ही वे रखते हैं। पत्नी कोषिष करती है कि उसे मानसिक क्लेष न पहूँचे।

'अस्मिता' कहानी में अस्मिता का पति पियक्कड़ है। देर रात वह हमेषा घर आया करता है। बेचारी सोचती, ठंडा भोजन पति को कैसे खिलाएगी। वह आग जलाकर भोजन गरम कर परोसती है। उसका पति नषे में बेसुध है। फिर भी प्यार से वह व्यवहार करती है। सामने हँस–हँस कर बात करती है। वह विलख कर रोती है, पर एकांत में जाकर। भारतीय नारियों की विषेषता कहे या अवगुण!

'बूंद पानी' में कालिंदी विषेष्वर की पत्नी है। वह पति तथा परिवार दोनों की मर्यादा का ख्याल रखती है। सहनषीलता की उसमें कमी नहीं है। अभावों में भी वह संघर्ष करती है। दुःख से घबड़ाती नहीं। फटे–वस्त्रों को सीलकर तथा रंगकर पहनती। दीनता के कारण ही उसके चेहरे पर खिन्नता कभी–कभी प्रकट होती है। उसकी स्थिति से उसका पति भी दुःखी रहता– '' विषेष्वर ने देखा कालिंदी की काली धोती तार–तार हो रही है। इज्जत ढ़कना तक अब उससे संभव नहीं। एक गहरी सांस भरकर वह कमरे में चला गया।''31

'किसी एक शहर में', कहानी में अनाम महिला प्राइवेट फर्म में नौकरी करती है। अच्छी तनख्वाह भी नहीं मिलती। काफी संघर्ष करना पड़ता है उसे। परिवार चलाने लायक भी वेतन नहीं मिलता। किन्तु स्वाभिमान तथा इज्जत से जीना चाहती है। देह–षोषण के षडयंत्र को विफल कर देती है। विपत्तियों के बीच भी कमल की तरह वह हँसती–खिलखिलाती रहती है।

भारतीय नारियाँ परिस्थितियों से समझौता करना जानती है, स्वयं कष्ट सहकर परिवार को सुखी देखना चाहती है। हिमांषु जोषी की कहानियाँ हो या उपन्यास नारी पात्रों के सहज चित्रण उनमें हुए हैं। अधिकांष स्त्रियाँ जीवन के कटु सत्यों से साक्षत्कार करती हैं।संदर्भ–सूची

1. हिमांशु जोषी : 'अरण्य', पृ0 37
2. हिमांशु जोषी : 'कगार की आग', पृ0 57
3. हिमांशु जोषी : 'तुम्हारे लिये', पृ0 57
4. हिमांशु जोषी : 'तुम्हारे लिये', पृ0 60
5. हिमांशु जोषी : 'तुम्हारे लिये', पृ0 68
6. हिमांशु जोषी : 'छाया मत छूना मन', पृ0 23
7. हिमांशु जोषी : महासागर ', पृ0 95
8. हिमांशु जोषी : महासागर ', पृ0 97
9. हिमांशु जोषी : 'सफेद सपने', अंततः तथा अन्य कहानियां
10. हिमांशु जोषी : कटी हुई किरणें, जलते हुए डैने, पृ0 118
11. हिमांशु जोषी : किनारे के लोग, अंततः तथा अन्य कहानियां, पृ0 222
12. हिमांशु जोषी : सागर तट के शहर, पृ0 127
13. डॉ0 श्यामनंदन किषोर : 'जीवन साहित्य और संस्कृति', पृ0 12
14. अमर सिह बधान : 'भौतिकता से अध्यात्म की ओर' कालांतर' नवम्बर, 2003, पृ0 19
15. अमर सिंह बधान : ''भौतिकता से अध्यात्म की ओर' कालांतर, नवम्बर, 2003 पृ0 21
16. हिमांशु जोषी : महासागर, पृ0 91
17. हिमांशु जोषी : 'सु–राज', पृ0 34
18. हिमांशु जोषी : 'अरण्य', पृ0 20
19. हिमांशु जोषी : 'अरण्य', पृ0 121
20. हिमांशु जोषी : 'कगार की आग', पृ0 72
21. हिमांशु जोषी : महासागर, पृ0 85
22. हिमांशु जोषी : महासागर, पृ0 91
23. हिमांशु जोषी : महासागर, पृ0 136
24. हिमांशु जोषी : 'तुम्हारे लिए', पृ0 142
25. हिमांशु जोषी : 'सजा' मनुष्य चिन्ह, पृ0 14

26. हिमांशु जोषी : 'कगार की आग', पृ0 97
27. हिमांशु जोषी : 'समय साक्षी है', पृ0 147
28. हिमांशु जोषी : 'कगार की आग', पृ0 52
29. हिमांशु जोषी : उसका तारा, पृ0 51
30. हिमांशु जोषी : परिणति, अंततः तथा अन्य कहानियां, पृ0 94
31. हिमांषु जोषी : बूंद पानी, अंततः तथा अन्य कहानियां, पृ0 203